कथा सरिता

सुदामा गरीब क्यों ?

सुदामाजी को गरीबी क्यों मिली? आज तक आपको ये जानकारी नहीं होगी कि सुदामा जी गरीब थे तो क्यों?

सुदामा को गरीबी क्यों मिली : -

अगर आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो सुदामा जी बहुत धनवान थे। जितना धन उनके पास था किसी के पास नहीं था। लेकिन अगर भौतिक दृष्टि से देखा जाये तो सुदामाजी बहुत निर्धन थे। आखिर क्यों?

एक ब्राह्मणी थी जो बहुत निर्धन थी। भिक्षा मांग कर जीवन यापन करती थी। एक समय ऐसा आया कि पाँच दिन तक उसे भिक्षा नहीं मिली। वह प्रतिदिन पानी पीकर भगवान का नाम लेकर सो जाती थी। छठवें दिन उसे भिक्षा में दो मुट्ठी चने मिले। कुटिया पे पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। ब्राह्मणी ने सोचा अब ये चने रात में नहीं खाऊंगी, प्रातः काल वासुदेव को भोग लगाकर तब खाऊंगी। यह सोचकर ब्राह्मणी ने चनों को कपड़े में बांधकर रख दिया और वासुदेव का नाम जपते-जपते सो गयी।

देखिये समय का खेल :-

कहते हैं, पुरूष बलि नहीं होत है, समय होत बलवान।

ब्राह्मणी के सोने के बाद कुछ चोर चोरी करने के लिए उसकी कुटिया में आ गये। इधर-उधर बहुत ढूंढ़ा, चोरों को वह चनों की बंधी पोटली मिल गयी। चोरों ने समझा इसमें सोने के सिक्के हैं। इतने में ब्राह्मणी जाग गयी और शोर मचाने लगी। गाँव के सारे लोग चोरों को पकड़ने के लिए दौड़े। चोर वह पोटली लेकर भागे। पकड़े जाने के डर से सारे चोर संदीपन मुनि के आश्रम में छिप गये।

संदीपन मुनि का आश्रम गाँव के नज़दीक था जहाँ श्री कृष्ण और सुदामा शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।

गुरूमाता को लगा कि कोई आश्रम के अन्दर आया है। गुरूमाता देखने के लिए आगे बढ़ीं तो चोर समझ गये कि कोई आ रहा है, चोर डर गये और आश्रम से भागे! भागते समय चोरों से वह पोटली वहीं छूट गयी। और सारे चोर भाग गये। इधर भूख से व्याकुल ब्राह्मणी ने जब जाना कि उसकी चने की पोटली चोर उठा ले गये। तो ब्राह्मणी ने श्राप दे दिया कि मुझ दीनहीन असहाय के जो भी चने खायेगा वह दरिद्र हो जायेगा। उधर प्रातःकाल गुरू माता आश्रम में झाड़ू लगाने लगीं तो झाड़ू लगाते समय गुरू माता को वही चने की पोटली मिली। गुरू माता ने पोटली खोल के देखी तो उसमें चने थे। सुदामा जी और श्री कृष्ण जंगल से लकड़ी लाने जा रहे थे। रोज़ की तरह गुरू माता ने वह चने की पोटली सुदामा जी को दे दी। और कहा बेटा! जब वन में भूख लगे तो दोनों लोग यह चने खा लेना। सुदामा जी जन्मजात ब्रह्मज्ञानी थे। ज्यों ही चने की पोटली सुदामा जी ने हाथ में लिया त्यों ही उन्हें सारा रहस्य मालूम हो गया। सुदामा जी ने सोचा! गुरूमाता ने कहा है कि यह चने दोनों लोग बराबर बांट के खाना। लेकिन ये चने अगर मैंने त्रिभुवनपति श्री कृष्ण को खिला दिये तो सारी सृष्टि दरिद्र हो जायेगी। नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। मेरे जीवित रहते मेरे प्रभु दरिद्र हो जायें मैं ऐसा कदापि नहीं करूंगा। मैं ये चने स्वयं खा जाऊंगा लेकिन कृष्ण को नहीं खाने दूंगा। और सुदामा जी ने सारे चने खुद खा लिए। दरिद्रता का श्राप सुदामा जी ने स्वयं ले लिया चने खाकर। लेकिन अपने मित्र श्री कृष्ण को एक भी दाना चना नहीं दिया।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। गृह राज्यमंत्री किरेन रिजिजू को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्रह्माकुमारी बहनें।

इलाहाबाद-उ.प्र.। सांसद श्याम चरण गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुष्मा।

चुरू-राज.। पुलिस अधीक्षक राम मूर्ति जोशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।

नेपाल-राजविराज। प्रदेश नं.2 के प्रहरी दंगा नियंत्रण कार्यालय के जवानों को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में एस.पी. गोविंद कुमार साह, ब्र.कु. सरस्वती, ब्र.कु. संतोषी, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. दीपक व अन्य।

सर्वोच्च से हो सम्बंध

एक बार ऐसा हुआ कि एक पंडित जी थे। पंडित जी ने एक दुकानदार के पास पाँच सौ रुपये रख दिये, उन्होंने सोचा कि जब बच्ची की शादी होगी, तो पैसा ले लेंगे, थोड़े दिनों के बाद जब बच्ची सयानी हो गयी, तो पंडित जी उस दुकानदार के पास गये। उसने नकार दिया कि आपने कब हमें पैसा दिया था। उसने पंडित जी से कहा कि क्या हमने कुछ लिखकर दिया है, पंडित जी इस हरकत से परेशान हो गये और चिन्ता में डूब गये।

थोड़े दिन के बाद उन्हें याद आया कि क्यों न राजा से इस बारे में शिकायत कर दें ताकि वे कुछ फैंसला कर दें एवं मेरा पैसा कन्या विवाह के लिए मिल जाये। वे राजा के पास पहुँचे तथा अपनी फरियाद सुनाई। राजा ने कहा, कल हमारी सवारी निकलेगी, तुम उस लाला जी की दुकान के पास खड़े रहना। राजा की सवारी निकली। सभी लोगों ने फूलमालाएँ पहनायीं, किसी ने आरती उतारी। पंडित जी लाला जी की दुकान के पास खड़े थे। राजा ने कहा, गुरू जी आप यहाँ कैसे? आप तो हमारे गुरू हैं। आइये इस बग्घी में बैठ जाइये, लाला जी यह सब देख रहे थे, उन्होंने आरती उतारी, सवारी आगे बढ़ गई। थोड़ी दूर चलने के बाद राजा ने पंडित को उतार दिया और कहा कि पंडित जी हमने आपका काम कर दिया। अब आगे आपका भाग्य।

उधर लाला जी यह सब देखकर हैरान थे कि पंडित जी की तो राजा से अच्छी साँठ-गाँठ है। कहीं वे हमारा कबाड़ा ना करा दें। लाला जी ने अपने मुनीम को पंडित जी को ढूँढ़कर लाने को कहा। पंडित जी एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ विचार कर रहे थे। मुनीम जी आदर के साथ उन्हें अपने साथ ले गये। लाला जी ने प्रणाम किया और बोले, पंडित जी हमने काफी श्रम किया तथा पुराने खाते को देखा तो पाया कि हमारे खाते में आपका पाँच सौ रुपया जमा है। पंडित जी, दस साल में ब्याज के बारह हज़ार रुपये हो गये, पंडित जी आपकी बेटी हमारी बेटी है।

अतः एक हज़ार रुपये हमारी तरफ से ले जाइये तथा उसे लड़की की शादी में लगा देना, इस प्रकार लाला जी ने पंडित जी को तेरह हज़ार रुपये देकर प्रेम के साथ विदा किया, जब मात्र एक राजा के साथ सम्बन्ध होने भर से विपदा दूर हो जाती है, तो हम सब भी अगर दुनिया के राजा , दीनदयालु भगवान से अगर अपना सम्बन्ध जोड़ लें.... तो आपकी कोई समस्या, कठिनाई या फिर आपके साथ अन्याय का कोई प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता।

फरीदाबाद से.21-हरियाणा। होमरटन स्कूल के प्रिन्सीपल कुलदीप सिंह एवं टीचर्स स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. सपना तथा डॉ. बीना।

नैनीताल-उत्तराखण्ड। जिला न्यायाधीश वी.के. सुमन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

पटना-बिहार। डी.एम. रवि कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. संगीता।

फाज़िलनगर-उ.प्र.। कुशीनगर के जिलाधिकारी अनिल सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. उदय भान तथा ब्र.कु. शांति।

छपरा-बिहार। जिला जेल सुपरीन्टेंडेंट मनोज सिन्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनामिका। साथ हैं ब्र.कु. आकृति।

भीलवाड़ा-राज.। संगम ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ के चेयरमैन रामपाल सोनी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

धनौला-बरनाला(पंजाब)। रिटायर्ड सी.एम.ओ. ज्ञानचंद जी एवं उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. बृज बहन।